का विचार आज भी उतना ही महत्वपूर्ण है जितना महात्मा बुद्ध व महात्मा गांधी के समय में था।

(II) स्वतन्त्रता के बाद भारत की विदेश नीति का निर्माण व विकास

(Making and Development of India's Foreign Policy after Independence)

15 अगस्त, 1947 को भारत की स्वतन्त्रता के बाद भारत की विदेश नीति का निर्माण जवाहर लाल नेहरु के मार्गदर्शन में ही हुआ। यद्यपि 1925 में ही नेहरु को विदेश विभाग का अध्यक्ष बना दिया गया था, लेकिन राष्ट्रीय आन्दोलन की व्यस्तता के कारण नेहरु जी भारत के लिए स्वतन्त्र विदेश नीति नहीं दे सके। आगे चलकर ही उन्होंने भारत की विदेश नीति का प्रारूप तैयार किया ताकि स्वतन्त्र भारत के अन्दर उसे लागू किया जा सके। स्वतन्त्रता के बाद नेहरु जी ने स्पष्ट किया कि भारत अमेरिका, ब्रिटेन तथा सोवियत संघ के साथ मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध कायम रखेगा। नेहरु जी ने स्वतन्त्र भारत की विदेश नीति पर 7 सितम्बर 1947 को राष्ट्र के नाम सन्देश देते समय कहा कि "हमारा विचार प्रगतिशील तरीके से कार्य करने का है जिनसे हम अपने आंतरिक मामलों और विदेशी सम्बन्धों में कार्य करने की स्वतन्त्रता प्राप्त कर सकें। हमारा विश्वास है कि शक्ति और स्वतन्त्रता अविभाज्य है और यदि कहीं भी किसी को स्वतन्त्रता से वंचित किया जाता है तो उससे कहीं अन्यत्र स्वतन्त्रता को खतरा उत्पन्न होता है जिसके कारण युद्ध और संघर्ष उत्पन्न होता है। हम विशेष रूप से उपनिवेशी और पराधीन देशों कसे स्वतन्त्र देखने के इच्छुक हैं और सभी जातियों के लिये सिद्धान्त व व्यवहार में समान अवसरों को मान्यता देना चाहते हैं। हम किसी पर प्रभुत्व नहीं चाहते और हम अन्य लोगों पर कोई विशेषाधिकार पूर्ण स्थिति का दावा नहीं करते हैं। लेकिन हम इस बात का अवश्य दावा करते हैं कि हमारे लोगों के साथ समान और सम्मानजनक व्यवहार हो। चाहे वे कहीं भी जायें, उनके विरुद्ध किसी तरह का भेदभाव न हो।"

राष्ट्रीय आन्दोलन के समय ही नेहरु जी की अंग्रेजी सरकार की नीतियों के प्रति असम्बद्धता ने अपना उग्र रूप ले लिया था। अन्तरिम सरंकार के प्रधानमन्त्री की हैसियत से उन्होंने 1946 में ही भारत की विदेश नीति के अन्तर्गत स्थान पा गए और आज भी हैं। इन उद्देश्यों में स्वतन्त्र विदेश नीति, अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति का समर्थन, उपनिवेशवाद व साम्राज्यवाद का विरोध, रंगभेद की नीति की निन्दा, पराधीन देशों की स्वतन्त्रता का समर्थन, पड़ोसी देशों से मधुर सम्बन्ध, प्रवासी भारतीयों की विदेशों में सुरक्षा आदि शामिल हैं। आगे चलकर शीत युद्ध की परिस्थितियों को देखते हुए नेहरु ने असंलग्नता की नीति को ही भारत की विदेश नीति का आधार बनाया। उसने घोषणा की कि भारत किसी गुट में शामिल न होकर ही विश्व शान्ति के लिए प्रयास करेगा।" नेहरु ने यह भी स्पष्ट किया कि भारत की गुटनिरपेक्षता तटस्थ नहीं है। यह अन्तर्राष्ट्रीय घटनाओं के प्रति सचेत रहने की है। अमेरिकन सीनेट में भाषण देते हुए नेहरु जी ने कहा था-"जहाँ स्वतन्त्रता के लिए खतरा उपस्थित हो, न्याय को धमकी दी जाती हो अथवा जहाँ आक्रमण होता है, वहाँ न तो हम तटस्थ रह सकते हैं और न ही रहेंगे।" नेहरु जी की इसी नीति ने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर सम्मान दिलाया।

नेहरु जी ने अपनी विदेश नीति में राष्ट्रीय हित के उद्देश्य को सर्वोपरि स्थान दिया। 4 दिसम्बर 1947 में उन्होंने संविधान सभा में कहा कि "हो सकता है कि हम शान्ति और स्वतन्त्रता की ही बात करें और जो हम कहें उसे द ढ़ संकल्प होकर लागू करना भी चाहें। परन्तु अन्ततोगत्वा, सरकार उस देश के हित में ही कार्य करेगी जिस पर वह शासन करती है और कोई भी सरकार ऐसा कार्य नहीं कर सकती जो देश हित के विरुद्ध हो।" नेहरु जी ने राष्ट्रीय हित के साथ-साथ विश्व शान्ति के लिए शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व के सिद्धान्त का अपने पंचशील सिद्धान्त में प्रतिपादन किया। नेहरु

जी ने कहा कि हमारी नीति ऐसी परिंस्थितियों को रोकने की होनी चाहिये जो विश्व शान्ति को खतरा उत्पन्न करे। इसी कारण भारत किसी सैनिक गुट में शामिल नहीं हुआ। विश्व शान्ति के लिए ही नेहरु जी ने निःशस्त्रीकरण का समर्थन करते हुए उसे भारत की विदेश नीति में जगह दी। विश्व शान्ति के लिए नेहरु जी ने उन सभी देशों की स्वतन्त्रता का समर्थन किया जो द्वितीय विश्व युद्ध के बाद अपनी स्वतन्त्रता के लिए लड़ रहे थे।

नेहरु युग में भारत की विदेश नीति का व्यावहारिक रूप

(Foreign Policy of India in the Nehru Period)

जिस समय नेहरु ने भारत के प्रधानमन्त्री का पद गहण किया, उस समय भारत-पाक विभाजन से उत्पन्न कश्मीर समस्या एक प्रमुख मुद्दा थी। कश्मीर पर कबायली आक्रमण के विरुद्ध नेहरु ने UNO में शिकायत की और UNO आयोग का कठन किया गया। 1950 में कोरिया संकट में भारत ने दक्षिण कोरिया का पक्ष लिया। उसके बाद हिन्द चीन विवाद, स्वेज नहर संकट के दौरान भी भारत की विदेश नीति काफी सफल रही। 1951 में भारत ने सानफ्रांसिसको सम्मेलन में होने वाली जापान सन्धि पर आपत्ति उठाकर स्वतन्त्र द ष्टिकोण का परिचय दिया और इस सन्धि पर हस्ताक्षर नहीं किए। 1954 में नेहरु जी चीन की यात्रा पर गए और दोनों देशों में पंचशील सिद्धान्त लागू करने पर समझौता हुआ। इससे हिन्दू चीनी भाई-भाई का नारा बुलन्द किया गया। इसके बाद 1955 में बान्डुंग सम्मेलन में पंचशील सिद्धान्त को स्वीकार किया गया। 1959 में दलाई लामा ने भारत में राजनीतिक शरण प्राप्त की। इसी कारण 1962 में भारत पर चीन ने आक्रमण कर दिया और इस अग्नि परीक्षा में भारत की विदेश नीति असफल रही। इस दौरान नेहरु जी विदेशी सहायता प्राप्त करने के लिए अमेरिका व रूस गए। अमेरिका ने भारत की पूरी मदद नहीं की। इसी तरह 1962 में भारत को रूस से अधिक सहायता प्राप्त नहीं हो सकी। इसी कारण नेहरु जी की विदेश नीति की सर्वत्र निन्दा हुई। आलोचकों ने कहना शुरु कर दिया कि भारत अब गुटनिरपेक्ष देश नहीं रह गया है।, चीनी आक्रमण ने उसकी पोल खोल दी है और भारत द्वारा रूसी सहायता प्राप्त करने से भारत की गुटनिरपेक्षता अब प्रासंगिक व निष्पक्ष नही रह गई है। इसके बाद 1964 में नेहरु जी की म त्यु हो गई और आलोचकों ने नेहरु की नीति को भारत की विदेश नीति मानने की बजाय, उसे नए सिरे से निर्धारित करने की आवश्यकता पर जोर दिया।

नेहरु की भारत की विदेश नीति को देन

(Nehru's Contribution to India's Foreign Policy)

नेहरु जी लम्बे समय तक भारत के प्रधानमन्त्री रहे और भारत की विदेश नीति पर नेहरु का पूरा प्रभाव रहा। उसके शासन काल में भारत की विदेश नीति के कुछ नये सिद्धान्तों की नींव पड़ी। उसकी विदेश नीति के वही सिद्धान्त आज भी भारत की विदेश नीति के उद्देश्य व सिद्धान्त हैं। ये उद्देश्य व सिद्धान्त निम्नलिखित है :-

(1) उपनिवेशवाद, साम्राज्यवाद व रंगभेद की नीति का विरोध।

(2) विश्व शान्ति का समर्थन।

(3) पंचशील व शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का सिद्धान्त।

(4) गुटपनिरपेक्षता का सिद्धान्त।

(5) निःशस्त्रीकरण का समर्थन।

(6) `मानवाधिकारों में विश्वास।

(7) अन्तर्राष्ट्रीय विवादों को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करना।

(8) पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध।

(9) आदर्शवादी व यथार्थवाद का सुन्दर समन्वय।

(10) संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन।

नेहरु की विदेश नीति का मूल्यांकन

(Evaluation of Nehru's Foreign Policy)

यद्यपि नेहरु जी ने विदेशों के साथ अच्छे समन्वय स्थापित करने की नीति अपनाई। उसने अपने पड़ोसी देशों के साथ भी मधुर सम्बन्ध स्थापित किए। उसने विश्वशान्ति के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ का समर्थन किया और निरस्त्रीकरण के विचार पर भी विश्व का ध्यान आकर्षित किया। उसने शीत युद्ध के वातावरण में अपना गुटनिरपेक्षता का सिद्धान्त तथा पंचशील का सिद्धान्त पेश करके विश्व शान्ति का आधार मजबूत किया। इतना होने के बाद भी 1962 में चीनी आक्रमण के समय नेहरु की विदेश नीति का आदर्शवादिता कपोल कल्पना साबित हुई और विदेश नीति के समीक्षकों ने भारत की विदेश नीति की आलोचना शुरु कर दी। उनका तर्क था कि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में शान्तिपूर्ण सह-अस्तित्व का विचार और युद्ध दो परस्पर विरोधी बातें हैं। राष्ट्रीय हित की प्राप्ति केवल शान्तिपूर्ण तरीकों से ही नहीं हो सकती, बल्कि इसके लिए युद्ध जैसे अमानवीय साधनों का भी सहारा लेना पड़ता है। नेहरु की विदेश नीति की समीक्षा करते हुए जे० बंधोपाध्याय ने लिखा है-"नेहरु की विदेश नीति यथार्थवाद की बजाय आदर्शवाद पर अधिक जोर देती है।" आलोचकों का कहना है कि चीनी आक्रमण के बाद नेहरु की गुटनिरपेक्षता की नीति धराशायी हो चुकी है। चीनी आक्रमण के बाद भारत का झुकाव साम्यवादी गुट की तरफ बढ़ने से गुटनिरपेक्षता की कोई प्रासंगिकता नहीं हो सकती। दूसरी बात यह भी कही गई कि गुट निरपेक्षता आक्रमण के विरुद्ध कोई गारन्टी नहीं देती। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि नहेरु जी की विदेश नीति का भारत की विदेश नीति के निर्माण और विकास में कोई योगदान नहीं है। सत्य तो यह है कि भारत की विदेश नीति आज भी उन उद्देश्यों व सिद्धान्तों को समेटे हुए है जो नेहरु की विदेश नीति में थे। इसलिए नेहरु की विदेश नीति को अप्रासंगिक व कोरी आदर्शवादी मानना सर्वथा गलत है।

नेहरु के बाद भारत की विदेश नीति का विकास

(Evolution of India's Foreign Policy after Nehru)

नेहरु जी के बाद कार्यवाहक प्रधानमन्त्री के रूप में गुलजारी लाल नन्दा ने 27 मई, 1964 से 9 जून, 1964 तक भारत की विदेश नीति को नेहरु जी के सिद्धान्तों पर ही क्रियान्वित किया। उसके बाद लाल बहादुर शास्त्री ने प्रधानमन्त्री बनते ही भारत की विदेश नीति में परिवर्तन के संकेत दिए। इस दौरान 1965 में भारत पर पाकिस्तान ने आक्रमण कर दिया और 1966 में रूस की मध्यस्थता द्वारा ताशकन्द समझौत हुआ। इसके अतिरिक्त पाकिस्तान ने हजरत बल दरगाह से पैगम्बर मुहम्मद साहब का पवित्र बाला चोरी होने पर भारत विरोधी अभियान चलाया। इसी तरह कच्छ की खाड़ी सम्बन्धी विवाद भी खड़ा किया। शास्त्री जी ने भारत की विदेश नीति को सैद्धान्तिक पक्ष से हटाकर व्यावहारिक बनाने पर जोर दिया, लेकिन उसने गुटनिरपेक्षता का परित्याग नहीं किया। शास्त्री जी ने प्रयासों के परिणामस्वरूप अमेरिका ने पाक को दी जाने वाली आर्थिक मदद बन्द कर दी। इसी तरह रूस ने भी UNO में भारत का साथ दिया। लेकिन दुर्भाग्यवश भारत की विदेश नीति को व्यावहारिक रूप देने वाले महान व्यक्तित्व की जल्दी ही म त्यु हो गई।

शास्त्री जी की म त्यु के बाद भारत की प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी बनी। इन्दिरा जी ने नेहरु जी की विदेश नीति को व्यावहारिक बनाने के लिए कूटनीतिक उपायों का प्रयोग किया। इन्दिरा गांधी के कार्यकाल में ही भारत-पाकिस्तान समस्या अधिक उग्र हुई। इस बार पाकिस्तान ने पूर्वी पाकिस्तान (बंगला देश) को लेकर भारत पर 3 दिसम्बर, 1971 को आक्रमण कर दिया। भारत ने इस युद्ध में पूर्वी पाकिस्तान को बंगला देश के रूप में स्वतन्त्र राष्ट्र को विश्व मानचित्र पर प्रतिष्ठित किया। इस युद्ध ने भारत को अन्तर्राष्ट्रीय पटल पर एक महान शक्ति के रूप में स्थापित किया। इसी दौरान 1977 में ही भारत ने सोवियत संघ के साथ एक मैत्री एवं सहयोग की सन्धि की। 1971 के भारत-पाक युद्ध के बाद 2 जुलाई, 1972 को शिमला समझौता हुआ। इसमें दोनों देशों ने आपसी विवादों को शान्तिपूर्ण ढंग से हल करने के प्रयास शुरु कर दिये। इन्दिरा गांधी ने चीनी परमाणु परीक्षण (1964) के मध्येनजर भारत को भी परमाणु शक्ति सम्पन्न राष्ट्र बनाने की कवायद तेज कर दी। 18 मई, 1974 को पोकरण नामक स्थान पर भारत ने प्रथम परमाणु परीक्षण किया और भारत को महान राष्ट्र बना दिया। इसके साथ ही इन्दिरा गांधी ने पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित किए। उसने गुटनिरपेक्ष आन्दोलन को नई दिशा दी। इसी दौरान उसने हिन्द महासागर को हमेशा के लिए शान्ति का क्षेत्र घोषित कराकर विश्व शान्ति की दिशा में महान कदम बढ़ाया। इन्दिरा गांधी ने राष्ट्रीय सुरक्षा को सर्वाधिक महत्त्व दिया। उसके बाद 24 मार्च, 1977 को मोरारजी देसाई भारत के प्रधानमन्त्री बने। उन्होंने अमेरिका तथा रूस के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास किए और स्वतन्त्र विदेश नीति के संचालन का संकल्प लिया। उन्होंने पड़ोसी देशों के साथ भी मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास किए। जून 1978 में उन्होंने अमेरिका की यात्रा की ओर उसके बाद 1979 में विदेश मन्त्री अटल बिहारी वाजपेयी जी अमेरिका की यात्रा पर गये। इसके भारत अमेरिका सम्बन्धों में नए युग की शुरुआत हुई। इसके अतिरिक्त उन्होंने भारत-बंगला देश के बीच नदी जल बंटवारे से सम्बन्धित फरक्का विवाद हल किया और पाकिस्तान व श्रीलंका की भी यात्रा की। इस दौरान भारत की विदेश नीति पूर्णतया सफल रही। इसके बाद अल्पकाल के लिए भारत के प्रधानमन्त्री चौ० चरणसिंह बने। उन्होंने पूर्ववर्ती सरकार की ही विदेश नीति का पालन किया। उसके बाद 1980 में दोबारा श्रीमती इन्दिरा गांधी भारत की प्रधानमन्त्री बनी। इस दौरान भारत-पाक सम्बन्धों में कटुता आई। उन्होंने एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यारोप जड़ने शुरु कर दिये। 1981 में भारत ने चीन के साथ सम्बन्ध सुधारने के लिए सांस्कृतिक समझौता किया। इस काल में भारत-अमेरिका सम्बन्धों को सुधारने की कवायद भी की गई, लेकिन अमेरिका द्वारा पाक को दी जाने वाली आर्थिक व सैनिक सहायता ने दोनों के सम्बन्धों में खट्टास पैदा कर दी। 1981 में श्रीलंका से औद्योगिक समझौता भी हुआ और 1982 में भारत के राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी स्वयं वहां गए। लेकिन फिर भी भारत-श्रीलंका के बीच तमिल समस्या पर गंभीर मतभेद उपजे। इस दौरान भारत ने रूस के साथ सम्बन्धों को अधिक मजबूत बनाया। 1984 में श्रीमती इन्दिरा गांधी की म त्यु हो गई और इस तरह भारत की विदेश नीति को यथार्थवादी बनाने की कवायद रुक गई।

श्रीमती इन्दिरा गांधी की म त्यु के बाद राजीव गांधी भारत के प्रधानमन्त्री बने। उन्होंने सर्वप्रथम अक्तूबर 1985 में राष्ट्रमण्डलीय सम्मेलन में अफ्रीकी नेता नेल्सन मन्डेला की रिहाई की मांग की। उसके बाद उन्होंने क्यूबा यात्रा की और 1985 में ही SAARC संगठन की सदस्यता ग्रहण की। इस संगठन के तहत भारत ने अपने पड़ोसी देशों के साथ मधुर सम्बन्ध स्थापित करने की आवश्यकता महसूस की और इस दिशा में कुछ सार्थक कदम उठाए। इसी वर्ष वे अमेरिका की यात्रा पर गए ताकि भारत-अमेरिकी सम्बन्धों में सुधार लाया जा सके। इसके अतिरिक्त वे अफ्रीकी देशों की यात्रा पर भी गए। उन्होंने पाकिस्तान के साथ भी सम्बन्ध सुधारने की नीति का अमल किया। उन्होंने 1986 में पाकिस्तान के साथ एक व्यापारिक समझौता भी किया। उन्होंने नेपाल, बंगला देश तथा भूटान के साथ भी नए स्तर के सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास किए। 1987 में वे भारत-श्रीलंका सम्बन्धों को नया आयाम देने के लिये श्रीलंका के दौरे पर गए और वहां की जातीय समस्या को

हल करने के लिए शान्ति सेना भी भेजी। उसने रूस के साथ भी मधुर सम्बन्ध बनाए। परन्तु एक बम्ब विस्फोट में उनकी म त्यु हो गई और भारत की व्यावहारिक विदेश नीति पर कुछ समय के लिए ग्रहण सा लग गया।

राजीव गांधी के बाद भारत के प्रधानमन्त्री वी०पी० सिंह ने भी पहले वाली ही विदेश नीति को क्रियान्वित किया। कुछ समय तक चन्द्रशेखर भी भारत के प्रधानमन्त्री रहे। इस दौरान नेपाल के साथ सम्बन्ध सुधारे गये। 1991 में पी०वी० नरसिम्हाराव ने प्रधानमन्त्री बनते ही आर्थिक उदारीकरण की नीति के तहत भारतीय अर्थव्यवस्था को विश्व अर्थव्यवस्था के साथ जोड़ने की कवायद शुरु की। इस दौरान भारत के पड़ौसी देशों के साथ-साथ ब्रिटेन, रूप तथा अमेरिका के साथ सम्बन्ध मजबूत हुए। इस काल में भारत ने NPT तथा CTBT सन्धि (1993) पर हस्ताक्षर करने से मना कर दिया। इसलिए भारत की अमेरिका व उसके पिछलग्गू देशों के साथ सम्बन्धों में कुछ खट्टास आ गई। उसके बाद कुछ समय के लिए भारत में वाजपेयी व उसके बाद देवगौड़ा के नेत त्व वाली अल्पकालीन सरकारें बनी। इस दौरान भारत ने अपने पड़ौसी देशों के साथ-साथ नए देशों के साथ भी मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के प्रयास किए। देवगौड़ा सरकार ने इजराइल के साथ सम्बन्ध स्थापित किए और ब्रिटेन के साथ सम्बन्धों को भी महत्व दिया। उसके बाद 21 अप्रैल 1997 को इन्द्रकुमार गुजराल ने प्रधानमन्त्री बनते ही पाक के साथ-साथ अन्य पड़ौसी देशों से मधुर सम्बन्ध स्थापित करने के लिए अपना 'गुजराल सिद्धान्त' पेश किया। इसके अतिरिक्त गुजराल ने 1997 में UNO की सुरक्षा परिषद् में भारत की सदस्यता का दावा भी पेश किया। गुजराल ने भी मुक्त व्यापार का समर्थन किया और दक्षिण एशिया को मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने की आवश्यकता पर जोर दिया। उसने चीन व नेपाल से विशेष मैत्री वार्तायें भी की। इसके साथ ही वे अफ्रीकी यात्रा पर भी गए। इस युग में भारत के अमेरिका तथा पड़ौसी देशों के बीच अच्छे सम्बन्ध रहे।

गुजराल के बाद 1998 में अटल बिहारी वाजपेयी ने भारत के शासन की बागडोर फिर से सम्भाली। वाजपेयी ने आर्थिक सुधारों के साथ-साथ राष्ट्रीय सुरक्षा पर भी अधिक जोर दिया। 1998 में ही भारत ने गोरी नामक प्रक्षेपास्त्र का परीक्षण किया। इसके बाद मई 1998 में भारत ने पांच भूमिगत परमाणु परीक्षण करके विश्व का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट किया। यद्यपि इसकी विश्व समुदाय ने काफी आलोचना की, लेकिन भारत ने आत्मसुरक्षा व शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए परमाणु तकनीक का उदाहरण देकर विश्व समुदाय का मुंह बन्द कर दिया। इस दौरान पाक द्वारा भी परमाणु परीक्षण करके भारत की विदेश नीति को चुनौती दी गई। 1998 में भारत-पाक के बीच कई मुद्दों पर बातचीत भी हुई, लेकिन कारगिल युद्ध ने भारत-पाक सम्बन्धों में खाई पैदा कर दी। इसके बाद वाजपेयी ने भारत-पाक सम्बन्धों में सुधार लाने के लिए लाहौर बस सेवा फिर से चालू की। लेकिन पाकिस्तान की ओर से आज तक कोई सार्थक कदम नहीं उठाया गया है। इसके अतिरिक्त वाजपेयी ने श्रीलंका, नेपाल, भूटान तथा बंगलादेश के साथ भी मधुर सम्बन्ध कायम किए। आर्थिक उदारीकरण के तहत इस युग में भारत के अमेरिका, ब्रिटेन तथा अन्य यूरोपीय देशों से मधुर सम्बन्ध स्थापित हुए। भारत के अफ्रीका व अन्य एशियाई देशों से भी सम्बन्धों में सुधार आया। वास्तव में वाजपेयी काल विदेश नीति का स्वर्णिम युग माना जा सकता है। पाकिस्तान को छोड़कर शेष सभी देशों से भारत के सम्बन्धों में सुधार ही आया है। हाल ही में चीन ने सिक्किम को भारत का ही अंग स्वीकार किया है। इससे भारत-चीन सम्बन्धों में नए युग की शुरुआत देखी जा सकती है। 22 मई, 2004 को भारत के प्रधानमन्त्री का पद ग्रहण करने के बाद प्रधानमन्त्री मनमोहन सिंह ने भी स्पष्ट कर दिया है कि भारत पड़ौसी देशों के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध कायम रखेगा। इस क्रम में भारत ने जुलाई 2004 में अमेरिका के साथ खुला आकाश समझौता करने पर बातचीत की तथा जून 2004 में भारत के विदेश मन्त्री नटवर सिंह पाकिस्तान के साथ सम्बन्ध सुधारने की पेशकश की और एक सांझा परमाणु सिद्धान्त पेश किया। इस समय भारत ने रूस के साथ भी द्विपक्षीय सहयोग बढ़ाने पर विचार किया। इसी महीने में भारत ने पाकिस्तान के साथ हॉटलाईन समझौतों

को चालू करने पर सहमति की। दोनों देशों के बीच विमान सेवाएं फिर से बहाल की गई।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि भारत की विदेश नीति परम्परा व आधुनिकता का सुन्दर मेल है। जहां कूटनीतिक उपायों की स्थापना कौटिल्य के समय में हो चुकी थी और शान्तिपूर्ण सहअस्तित्व का जन्म भी महात्मा बुद्ध और महात्मा गांधी के युग में ही हो गया था, वही गुटनिरपेक्षता का सिद्धान्त, संयुक्त राष्ट्र संघ में आस्था, निःशस्त्रीकरण का समर्थन आदि सिद्धान्त आधुनिक युग की उपज है। विदेश नीति को समसामयिक बनाने में अन्तर्राष्ट्रीय वातावरण का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। शीतयुद्ध की उत्पत्ति ने भारत को गुटनिरपेक्ष नीति का पालन करने को विवश किया। नेहरु जी ने पंचशील और शांतिपूर्ण सहअस्तित्व का ऐतिहासिक सिद्धान्त अन्तर्राष्ट्रीय शान्ति के लिए प्रयोग करके नया कीर्तिमान स्थापित किया। बदलते परिवेश में भारत ने भी अपनी विदेश नीति को बदला है और उसे समसामयिक बनाने का प्रयास किया है ताकि अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में उसकी महत्वपूर्ण भूमिका हो। सत्य तो यह है कि भारत की विदेश नीति आदर्शवादिता व यथार्थवादिता दोनों को साथ लेकर चल रही है। आवश्यकता पड़ने पर भारत अपने आदर्शवादी सिद्धान्तों की यथार्थवादिता या व्यावहारिकता का अमली जामा पहनाने में भी सक्षम है।